Answers to RHB–DS1/Set–2

1. (*i*) (ग) मनुष्य को सफलता प्रदान करता है।
   (*ii*) (क) समाज में व्याप्त निरक्षरता को
   (*iii*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (*iv*) (घ) शिक्षा के प्रति जागरूक हो गए हैं।
   (*v*) (क) उन्हें अंकगणित का ज्ञान नहीं होता।
2. (*i*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (*ii*) (ख) भेड़-चाल से फ़ैशन का अनुकरण करना।
   (*iii*) (ग) अनावश्यक तत्वों के प्रति आकर्षण
   (*iv*) (ख) युवाओं में फ़ैशन के प्रति बढ़ता रुझान।
   (*v*) (क) युवा अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।
3. (*i*) (घ) क्रिया पदबंध
   (*ii*) (ग) समूचे द्वीपवासियों
   (*iii*) (ख) विशेषण पदबंध
   (*iv*) (क) कबूतर परेशानी में <u>इधर-उधर</u> फड़फड़ा रहे थे।
   (*v*) (ख) सर्वनाम पदबंध
4. (*i*) (क) 1–(*i*), 2–(*iii*), 3–(*ii*)
   (*ii*) (क) सरल वाक्य
   (*iii*) (ख) छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी हीराबाई ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था।
   (*iv*) (ग) मिश्र वाक्य
   (*v*) (क) नूह ने जब उनकी बात सुनी तब दुखी होकर मुद्दत तक रोते रहे।
5. (*i*) (क) तत्पुरुष समास
   (*ii*) (घ) महान है जो भारत–कर्मधारय समास
   (*iii*) (क) सहन करने की शक्ति–तत्पुरुष समास।
   (*iv*) (ख) मन से रुग्ण
   (*v*) (ग) (*ii*) और (*iii*)
6. (*i*) (ख) एक ही लाठी से हाँकना – अच्छे-बुरे का अंतर न करना
   (*ii*) (क) घबरा जाना
   (*iii*) (घ) घाव पर नमक छिड़कना
   (*iv*) (ग) आग बबूला होना
   (*v*) (ग) खून जलाना
   (*vi*) (ख) भूत सवार होना
7. (*i*) (घ) अपने पौरुष बल से दुख पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं।
   (*ii*) (क) रोगमुक्त रहकर भवसागर को पार करने की शक्ति होना।
   (*iii*) (ख) निडर होकर मुसीबतों का सामना करना।
   (*iv*) (क) ईश्वर पर विश्वास रखते हुए निस्वार्थ भाव से उनकी आराधना करनी चाहिए।
   (*v*) (घ) ईश्वर से

8. (*i*) (क) पुस्तकीय ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण प्रेम रूपी ज्ञान होता है।

(*ii*) (ग) श्री कृष्ण ने गले में वैजयंती की माला धारण की है।

9. (*i*) (घ) (*iii*) और (*iv*)

(*ii*) (ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(*iii*) (ख) मारा गया था।

(*iv*) (क) साहस का

(*v*) (ख) भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अनेक बलिदान किए।

10. (*i*) (घ) (*ii*) और (*iv*)

(*ii*) (क) दोनों गाँवों के बीच वैवाहिक संबंध होने लगे।

11. (क) 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' तथा 'गिन्नी का सोना' दोनों ही पाठों में नैतिक मूल्यों तथा जीवन में आदर्शों के महत्व पर बात की गई है। 'गिन्नी का सोना' पाठ में लेखक ने जीवन में जिन आदर्शों के महत्व पर चर्चा की है 'तीसरी कसम' फिल्म के निर्माता शैलेंद्र जीवन के उन्हीं आदर्शों को चरम उत्कर्ष तक ले जाते हुए नज़र आते हैं। उन्होंने धन-लिप्सा में अंधे होकर कभी भी भावनाओं का व्यापार नहीं किया है। फिल्म में भी मानव हृदय की भावनाओं को बड़े ही सहज रूप में प्रस्तुत किया है। फिल्म निर्माता शैलेंद्र ने जिस प्रकार फिल्म की लाभ-हानि की चिंता किए बगैर जनता की रुचियों तथा ज्ञान का परिष्कार किया है, वह केवल एक आदर्शवादी हृदय ही कर सकता है। 'गिन्नी का सोना' पाठ में भी लेखक ने ऐसे ही आदर्शवादी लोगों का बखान किया है जिन्होंने अपने शाश्वत मूल्यों से समाज को चरम उत्कर्ष तक पहुँचाया है।

(ख) इस एकांकी का केंद्रीय पात्र वज़ीर अली अवध का बादशाह था जिसने अपनी हुकुमत के दौरान अवध को अंग्रेज़ों के प्रभाव से दूर रखा। अंग्रेज़ों ने षडयंत्र कर वज़ीर अली को अवध के तख्त से हटा दिया। पड़ोसी देश के राजा अंग्रेज़ी शासन व्यवस्था तथा अन्याय से क्षुब्ध थे। इसी कारण एकजुट हो सभी उन्हें भारत से बाहर करने की योजना बना रहे थे। इसे रोकने के लिए अंग्रेज़ों ने क्रांतिकारियों की शक्ति और एकजुटता को छिन्न-भिन्न कर उन्हें कमज़ोर करने का प्रयास किया। इसी प्रयास के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ों ने वज़ीर अली को उसके तख्त से हटाकर उसे तथा उसके वफादार सिपाहियों को पकड़ने का प्रयास किया।

(ग) मानव ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ करना शुरू कर दिया है। अपनी शक्ति और बुद्धि के दम पर मनुष्य ने प्रकृति पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया है। पेड़-पौधों की कटाई, प्रदूषण के बढ़ते प्रकोप तथा हथियारों की विनाशलीलाओं से धरती का वातावरण असुरक्षित होता जा रहा है। इसी परिवर्तन के परिणामस्वरूप प्रकृति असंतुलित हो गई है। इसी असंतुलन का ही परिणाम है कि अकसर हमें अत्यधिक गर्मी, बरसातें, बाढ़, समुद्री तूफान, नए-नए प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ता है। अब प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा पार हो चुकी है। चारों तरफ हो रही प्राकृतिक आपदाएँ भी प्रकृति की सहनशक्ति के समाप्त होने का ही संकेत है।

12. (क) मनुष्य का समर्थ भाव परोपकार करने में है। वही मनुष्य सही अर्थों में समर्थशाली है जो इस जीवन पथ पर दूसरों को भी अपने साथ लेकर आगे बढ़े। स्वार्थ की भावना होना अर्थात केवल अपने हित के विषय में सोचना तो पशुता के लक्षण हैं। दूसरों का कल्याण करते हुए आगे बढ़ना ही मनुष्य धर्म है। वास्तविक अर्थों में वही मनुष्य, मनुष्य कहलाने के योग्य है जो निस्वार्थ भाव से समस्त प्राणियों का कल्याण करे। अर्थात यह कविता हमें मनुष्यता का धर्म बताने के साथ-साथ सभी को साथ लेकर आगे बढ़ने की सीख देती है—'तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे।'

(ख) सुमित्रानंदन पंत जी द्वारा रचित कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में पर्वतों पर बह रहे झरनों का चित्रण किया गया है। ये बहते हुए झरने पर्वतों का यशोगान करते हुए प्रतिबिंबित किए गए हैं। पर्वतों की ऊँची चोटियों से 'झर-झर' करते हुए बहते हुए झरने देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे पर्वतों की उच्चता व महानता की गौरव-गाथा गा रहे हों। जहाँ तक बहते हुए झरने की तुलना का संबंध है तो बहते हुए झरने की तुलना मोती रूपी लड़ियों से की गई है। झरनों को पर्वतों से बहता हुआ देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पर्वतों के ऊपर से जल रूपी मोती की लड़ियाँ बनती हुई गिर रही हैं। झरने के बहने से जो ध्वनि उत्पन्न हो रही है, वे अपनी लयबद्धता के कारण यशोगान करते हुए प्रतीत हो रही हैं।

(ग) मीराबाई जी द्वारा रचित 'पद' में उनके आराध्य श्री हरि कृष्ण को भक्तों का कष्ट दूर करने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। श्री कृष्ण ने द्रोपदी को वस्त्र देकर, प्रहलाद तथा गजराज के प्राणों की रक्षा कर उनका कष्ट दूर किया था। मीराबाई जी ने अपने आराध्य से प्रार्थना की है कि वे अपने सभी भक्तों के कष्टों को दूर करें। मीराबाई जी अपने आराध्य श्री कृष्ण जी की चाकरी अर्थात सेवा करके उनके निकट रहना चाहती हैं क्योंकि वे उनकी अनन्य भक्त हैं तथा उनमें उनका एकनिष्ठ विश्वास है। वे अपनी प्रेम-भक्ति की अभिव्यक्ति करने के लिए उनके लिए बाग लगाकर प्रतिदिन सुबह उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं। इस प्रकार कवयित्री मीराबाई जी अपने आराध्य श्री कृष्ण के निकट रहना चाहती हैं।

13. (क) हरिहर काका की परिस्थिति तथा मनःस्थिति को देखते हुए लेखक ने यह कथन कहा है। हरिहर काका पहले की अपेक्षा अब अधिक अनुभवी हो गए थे। महंत जी द्वारा मिले विश्वासघात तथा गाँव में रमेसर की विधवा की स्थिति को देखकर उन्होंने अब यह भाँप लिया था कि एक बार ज़मीन अपने नाम लिखवाने के बाद उनके भाई तथा परिवार वाले उनके साथ कैसा व्यवहार करेंगे। महंत द्वारा उनके साथ जो व्यवहार किया गया था उसमें उन्हें मृत्यु का आभास हो गया था। मृत्यु का अनुभव इतने निकट तक होने के बाद हरिहर काका में मृत्यु से लड़ने तथा उसका वरण करने की शक्ति बढ़ गई थी। उन्हें पता था कि भाइयों के दबाव में आकर अगर उन्होंने ज़मीन उनके नाम लिख दी तो उनकी दशा मृत्यु से भी बदतर हो जाएगी। अतः इसी कारण अब उन्हें मृत्यु से भय नहीं रहा। इसी ज्ञान के कारण उनमें साहस का संचार हुआ है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें मृत्यु का वरण करने में भी भय नहीं लगता।

(ख) लेखक तथा उनके मित्र ग्रीष्मावकाश का भरपूर आनंद उठाते हुए कभी तालाब में तैरते हुए तो कभी मैदान में मित्रों के साथ खेलते हुए दिन व्यतीत करते थे। जब छुट्टियाँ बीतने लगती थी तब गृहकार्य के पूरा न होने का भय सताने लगता था। उस समय सभी बच्चे गृहकार्य को समय रहते पूरा कर लेने का हिसाब लगाने लगते थे। यदि रोज़ाना 15 सवाल हल किए जाएँ तो महीने का काम पूरा हो सकता है। इस प्रकार बच्चे खेल के प्रति अपना मोह त्याग नहीं पाते थे और अंततः जब गर्मियों की छुट्टियाँ समाप्त होने को होती थी तब उन्हें निर्भय होकर मार खा लेना गृहकार्य करने से अधिक सस्ता सौदा प्रतीत होता था। अतः कुछ बच्चे छुट्टियों के अंत तक खेल-कूद का आनंद उठाते थे। मुझे गृहकार्य को पूरा करने के बाद छुट्टियों का आनंद उठाना अच्छा लगता है। अतः मैं ग्रीष्मावकाश के पहले के कुछ दिन पूरी तरह से पढ़ाई को समर्पित होकर अपना गृहकार्य पूरा कर लेता हूँ। इसके बाद छुट्टियों का आनंद लेते हुए समय व्यतीत करता हूँ। ऐसा करने से छुट्टियों के अंतिम दिनों में किसी भी प्रकार का दबाब नहीं रहता है।

(ग) इफ़्फ़न की दादी एक मौलवी की बीवी होने के कारण नमाज़-रोज़े की पाबंद थी। वे अपने धर्म तथा संस्कृति के प्रति जागरूक थी। ईमानदारी से अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का पूरी निष्ठा के साथ पालन करती थीं। हिंदुओं के साथ भी उनका उठना-बैठना था। वे उनके रीति-रिवाज़ों से भली-भाँति परिचित थीं। जब वे शादी के बाद ससुराल आई तो मौलवी पति की संस्कृति तथा रीति-रिवाज़ों को अपना लिया। परंतु हिंदू संस्कृति के प्रति भी उनकी आस्था बनी रही जो मन में दबी रहती थी। इकलौते बेटे को जब चेचक निकली तो मन के किसी कोने में दफ़न हो चुका विश्वास जागृत हो गया। उनके द्वारा ऐसा किया जाना हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना को दर्शाता है। इफ़्फ़न की दादी को जितना विश्वास अपने धर्म पर था उतना ही विश्वास उन्हें हिंदू धर्म तथा रीति-रिवाज़ों पर भी था। खुले दिल से उन्होंने हिंदू संस्कृति को भी अपनाया था। उनके द्वारा ऐसा किया जाना धर्म के प्रति उनकी उदार भावना को दर्शाता है।

14. (क) **भारत में नोटबंदी**

नोटबंदी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पुराने नोटों या सिक्कों को बंद कर उनके स्थान पर नए सिक्के या नोट चलाए जाते हैं। नोटबंदी के बाद जब पुराने नोटों को बंद कर उनके स्थान पर नए नोटों को लागू कर दिया जाता है तब पुराने नोटों की मान्यता देश में खत्म हो जाती है। समय-समय पर भारत सरकार द्वारा नोटबंदी का निर्णय लिए जाने के कई कारण थे जिनमें से मुख्य भ्रष्टाचार को रोकना, देश में व्याप्त कालाधन समाप्त करना, नकली नोटों का व्यापार बंद करना, आतंकवाद की फंडिंग (सहायता) बंद करना आदि प्रमुख हैं। देश में कई ऐसे लोग हैं जो सरकार को कर न देकर धन को कालेधन के रूप में छिपाकर रखते हैं। इसके कारण देश में आर्थिक असमानता विद्यमान है। आम जनता को इसके कारण कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है लेकिन देशहित के पक्ष में यह आवश्यक है।

(ख) **सत्संगति**

सत्संगति अर्थात अच्छी संगति। ऐसी संगति मनुष्य में अच्छाई का संचार करती है। अच्छे मित्रों के साथ रहने वाला व्यक्ति अच्छाई की ओर उन्मुख होता है। सत्संगति हमें चरित्रवान बनाती है तथा हमारे हृदय में सत्य, ईमानदारी, परोपकार, सहृदयता जैसे मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा प्रतिष्ठापित करती है। सत्संगति अवगुणों को भी सद्गुणों में बदलकर एक आदर्श व्यक्ति बना देती है। वहीं कुसंगति अर्थात बुरी संगति ज़हर के समान विषैली होती है, जो हमारे अंदर बुराइयों का विष डाल देती है। कुसंगति में रहने वाला कभी-भी एक आदर्श व्यक्ति नहीं बन सकता। वह गलत रास्ते पर चल पड़ता है तथा बुराइयों एवं गलत आदतों के चंगुल में फँसता जाता है। इसी बात पर ज़ोर देते हुए रहीमदास जी का एक दोहा प्रचलित है–

कदली, सीप भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।

अर्थात संगति के अनुसार व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जैसे, स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूँद कदली अर्थात केले के पत्ते पर पड़ती है तो कपूर बन जाती है, यदि वह सीप में पड़े तो मोती बन जाती है और यदि वह साँप के मुख में गिर पड़े तो विष बन जाती है। अतः जीवन में संगति का बहुत बड़ा महत्व है। मुनष्य को सोझ-समझकर संगति का चुनाव करना चाहिए।

(ग) **अधिकार और कर्तव्य**

अधिकार और कर्तव्य मानव जीवन में एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। जीवन को सुरक्षित तथा सरल बनाने के लिए हमे कुछ अधिकार दिए गए हैं। परंतु इन अधिकारों के साथ-साथ समाज के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य भी होते है जिन कर्तव्यों का निर्वाह कर हम एक आदर्श समाज की स्थापना में अपना योगदान दे सकते हैं। अपने अधिकारों का उपयोग करने से पहले हमें सबके अधिकारों के विषय में सोचना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे अधिकारों के कारण किसी और के अधिकारों का हनन न हो। अधिकार से पहले प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य भी होता है कि वह दूसरों के अधिकारों के प्रति भी सजग रहे। नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं होता है। देश का कोई भी कानून कर्तव्यों का पालन न करने के लिए किसी को भी सज़ा नहीं देता है। परंतु समाज में रहने के नाते हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए समाज की उन्नति में सहायक बनें। कर्तव्यों का निर्वाह किए बिना अधिकार जताना स्वार्थ की निशानी है।

15. (क) सेवा में

संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
दिनांक : 30 मई, 20xx

विषय : वृक्षों की अंधाधुंध कटाई रोकने के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके दैनिक समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की ओर दिलाना चाहता हूँ।

आजकल दिल्ली तथा अन्य शहरों में सड़कें चौड़ी करने के लिए तथा नई-नई ईमारतों को बनवाने के लिए वृक्षों को बेरहमी से काटा जा रहा है। ये वृक्ष कई वर्षों से सड़कों के किनारे खड़े थे जिससे मुसाफिरों को छाया मिलती थी। इन्हीं वृक्षों पर अनेक पक्षियों का बसेरा था जो वृक्षों के कट जाने के कारण बेघर हो गए हैं। यदि केवल दिल्ली शहर की बात की जाए तो सड़कों पर गाड़ियों को अधिक स्थान देने के लिए लगभग 40,000 वृक्षों को काटा जा चुका है। इन वृक्षों को काटने से पूर्व आम नागरिकों को सूचित भी नहीं किया जाता है, जिसके कारण उन्हें काफी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में दिल्ली वृक्ष संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे वृक्षों के संरक्षण पर ध्यान दें। मेट्रो या कार पार्किंग के लिए काटे जाने वाले वृक्षों को उसी अनुपात में अन्य स्थानों पर लगवाकर शहर को सुरक्षित किया जा सकता है।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र को अपने सम्मानित एवं लोकप्रिय समाचार-पत्र में अवश्य स्थान देंगे।

धन्यवाद सहित
भवदीय

पवन शुक्ला

अथवा

(ख) सेवा में

प्रधानाध्यापक जी

केंद्रीय विद्यालय-2

करोल बाग, ब्लॉक-A

दिल्ली-1

दिनांक : 1 अगस्त, 20xx

विषय : विद्यार्थियों को नाटक का अभ्यास करवाने के लिए अनुमति माँगने हेतु।

महोदय,

मेरा नाम मानक गुप्ता है। मैं आपके विद्यालय की छात्र-परिषद का सचिव हूँ। आपसे मेरा सविनय निवेदन यह है कि विद्यालय की निर्धारित कक्षाओं के समाप्त होने के बाद विद्यार्थियों को नाट्य अभिनय का अभ्यास करवाने के लिए मुझे आपकी अनुमति चाहिए।

जैसा कि आप जानते हैं कि 15 अगस्त, 20xx को हमारे विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में हम देशभक्ति का एक नाटक प्रस्तुत करने जा रहे हैं। परीक्षा की तैयारी के कारण अधिकांश विद्यार्थियों को नाटक के अभिनय का समय नहीं मिल पाता है। एक साथ एक समय पर नाटक में भाग लेने वाले सभी छात्रों को एकत्रित करना कठिन है। इसलिए विद्यालय की सभी कक्षाओं के समाप्त होने के बाद विद्यार्थियों को एक घंटे के लिए रोककर नाटक का अभ्यास कराना हितकर होगा। कार्यक्रम के लिए समय भी कम बचा हुआ है।

अतः मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे इसकी अनुमति अवश्य देंगे। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद सहित।

आपका आज्ञाकारी छात्र

मानक गुप्ता

कक्षा-10 'अ'

16. (क)

दिल्ली नगर निगम

सूचना

पानी की पाइपलाइन में खराबी

दिनांक : 29 मई, 20xx

कॉलोनी के सभी निवासियों को यह सूचित किया जाता है कि आपके क्षेत्र सरिता विहार फेज़-2 में पानी की पाइपलाइन में आई खराबी के कारण इसकी मरम्मत की जा रही है। मरम्मत का काम चलने के कारण दो दिनों के लिए पानी की आपूर्ति को रोक दिया जाएगा। 30 मई से, 31 मई तक पानी नहीं आने के कारण आप सभी से अनुरोध है कि आज शाम अपने-अपने घरों में दो दिन के लिए पानी भर लें। आप सभी की इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

नगर-निगम अधिकारी

दिल्ली जल बोर्ड

शुभम उपाध्याय

अथवा

(ख)

दिल्ली पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, दिल्ली

सूचना

हिंदी दिवस का आयोजन

दिनांक : 29 अगस्त, 20xx

हमारे विद्यालय में 14 सितंबर, 20xx को हिंदी दिवस मनाया जाएगा। इस दिन कार्यक्रम में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ होंगी। इन गतिविधियों में भाग लेने के लिए आप आमंत्रित हैं। कार्यक्रम में भाग लेने वाले इच्छुक विद्यार्थी अपना नामांकन करवाने के लिए कार्यक्रम के सचिव से सपंर्क करें। नामांकन की अंतिम तिथि 5 सितंबर है।

- कवि सम्मेलन
- वाद-विवाद प्रतियोगिता
- भाषण प्रतियोगिता
- साहित्य हाट
- सद्भावना गोष्ठी
- चित्रकला प्रतियोगिता

नमन मिश्रा

सचिव

17. (क)

खोया-पाया ***खोया-पाया***

मैं अनिल त्यागी आप सभी रोहिणी निवासियों को यह जानकारी देना चाहता हूँ कि मुझे 20 मई, 20xx को सड़क पर टहलते हुए रिठाला मेट्रो स्टेशन के पास एक काला बैग मिला। इसमें कुछ ज़रूरी कागज़, कुछ रुपए तथा एक मोबाइल फ़ोन है। बैग में सभी सामान सुरक्षित है। बैग का दावेदार व्यक्ति मुझसे संपर्क कर बैग प्राप्त करे।

दूरभाष – XXXXXXXXXX

अथवा

(ख)

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस

हम सभी एकजुट होकर उपभोक्ता के रूप में अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनने का संकल्प लें। राष्ट्रहित के लिए मिल-जुलकर अपने कदम बढ़ाएँ।

जागो ग्राहक जागो।
बिल लिए बिना मत भागो।

भारत सरकार द्वारा जनहित में जारी।

18. (क) एक समय की बात है। किसी गाँव में एक लड़का रहता था। उसका नाम सिद्धार्थ था। उसके पिता की मृत्यु के बाद उसकी माँ ने अकेले ही बड़ी मुश्किल से उसका पालन-पोषण किया था। वह सातवीं कक्षा में पढ़ता था। वह पढ़ने-लिखने में बहुत होशियार था परंतु गाँव के कुछ बिगड़े हुए बच्चों की संगति में उसका मन पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगता था। एक दिन वह विद्यालय से भागकर अपने मित्रों के साथ आम के बगीचे से आम चुराकर खा रहा था। सभी बच्चे आम खाने का आनंद उठा रहे थे कि तभी बगीचे के माली ने उन्हें देख लिया। माली को समीप आता देखकर सभी बच्चे वहाँ से भाग गए परंतु केवल सिद्धार्थ वहाँ से भाग नहीं सका। माली ने उसे पकड़ लिया और समझाते हुए कहा कि तुम यदि इस तरह से पढ़ाई न कर अपना समय गँवाओगे तो अपनी माँ का सपना कैसे पूरा करोगे। वादा करो आज के बाद इन बच्चों के साथ कभी नहीं घूमोगे और मन लगाकर पढ़ाई करोगे। सिद्धार्थ को बात समझ में आ गई। उसने मन लगाकर पढ़ाई करने का वादा किया। यह सीख उसे जीवन भर याद रही। खूब मन लगाकर उसने पढ़ाई की और अपनी माँ का नाम रौशन किया। वह बड़ा होकर पुलिस का उच्चाधिकारी बना।

अथवा

(ख)

प्रेषक	–	abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता	–	bcd@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी)	–	xyz@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी)	–	qrs@gmail.com

विषय – कार खरीदने के लिए ऋण का आवेदन रद्द करवाने के संदर्भ में।

महोदय,

मेरा नाम मुकेश है। मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मैंने कार खरीदने के लिए आपके बैंक से पाँच लाख रुपए का ऋण लेने के लिए आवेदन किया था। परंतु अब मुझे पाँच लाख रुपए की आवश्यकता नहीं हैं। मेरी कंपनी की ओर से मुझे पाँच लाख रुपए का ऋण मिल गया है। कार खरीदने के लिए जितने रुपए की आवश्यकता थी, वह पूरी हो चुकी है। अतः मै आपसे यह विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि आप कृपया पाँच लाख रुपए का ऋण लेने का मेरा आवेदन रद्द करें। आशा है कि आप मेरा यह अनुरोध स्वीकार करेंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

मुकेश